Vol 6 Issue 6 March 2017

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.........

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: http://oldror.lbp.world/

REVIEW OF RESEARCH

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 3.8014(UIF)
VOLUME - 6 | ISSUE - 6 | MARCH - 2017

संगीत शिक्षण की आवश्यकता और उसका महत्व

डॉ0.मीता कौशल
रीडर–संगीत विभाग

प्रस्तावना –

संसार में प्रत्येक कला को जीवित रखने के लिए तथा उसके प्रचार एवं प्रसार के लिए उसका शिक्षण आवश्यक समझा जाता है। कोई भी कला अथवा विद्या किसी एक व्यक्ति तक ही सीमित रहे और वह उसे दूसरों को प्रदान न करें तो वह कला या विद्या उसी के साथ समाप्त हो जाती है।

ललित कलाओं में भारतीय संगीत कला को उच्च स्थान प्राप्त है। संगीत कला में गायन, वादन और वर्तन का समावेश होता है। उन्नम, गाना माध्यम बजाना, कनिष्ठ नाचना और विकट बताना इसी प्रकार संगीत कला को गुणी लोगों ने दिक्खेया, सिक्खेया, परिक्र्खया कहा है।

संगीत शिक्षा का लक्ष्य आधात्मिक रहा है इसी आध्यात्मिकता के बल पर मनुष्य मुक्ति को प्राप्त करता है। संगीत शिक्षा ही एक ऐसी शिक्षा है जिसके द्वारा मनुष्य अपने जीवन के प्रत्येक पहले को सँवार सकता है। संगीत का कण अन्दर होने से मनुष्य प्रभु प्राप्ति की चेष्ठा करता है। अर्थात हम देखते हैं कि संगीत कला ही ऐसी कला है,जो सच्चा ज्ञान प्राप्त कराने में सहायक है। ओम शब्द में स्वर का अभ्यास करने से मन एकाग्रता की गति को प्राप्त होता है तथा ईश्वर से साक्षात्कार का आभाव होता है।

यह ललित कहा महाफेल की आनन्ददायक वस्तुओं का आभूषण मानव के मनोरंजन का साधन संतो के लिये आत्मानन्द की मार्ग दर्शक, प्रेमियों के जीवन की मित्र, विरहाग्नि से पीडित व्यक्तियों को सांत्वना देने वाली, सहायक और अपाहिज एवं आपदाग्रस्त प्राणियों की सहचारी और प्रेमियों की ही नहीं अपितु इस प्रकार के सैकड़ों गुणों के अतिरिक्त इस कल्ग में और भी अनेक विशेषताऐं है। जो प्रत्यक्ष और अदृश्य होते हुए भी सहृदय प्राणियों को अस्वीकार नहीं है।

यदि संगीत की गहराइयों, कठिनतम वारीकियों और महानतम सिद्धान्तों तथा नियम आदि के कठिन स्थलों की उपेक्षा करके कतिपय साधारण विशेषताओं पर दृष्टिपात किया जाए तो निष्कर्ष रूपेण यही कहना होगा कि संगीत की शिक्षा मानव के लिए नितान्त आवश्यक है। उन कतिपय विशेषाताओं में से कुछ इस प्रकार हैं–

संगीत में स्वर, लय और शब्दों का विशेष महत्व है। गायन का निर्माण भी इन्हीं तीनों के मिश्रण से ही होता हैं इन त्रय शब्दों का सहयोग संगीत में विभिन्न प्रकार से होता है। – 'स्वर' आवाज अर्थात ध्वनि की कक्षाऐं और विशेष स्थान जो कि उतार चढ़ाव अथवा उसकी उच्च–नीच अवस्था से प्रकट होता है। 'लय' गति अथवा वजन को कहते हैं जो किसी निश्चित प्रमाण में हो और लय ही विशेष कड़ियों अथवा निश्चित जन को ताल कहते हैं संक्षप में लय की परिभाषा यही हो सकती है कि प्रत्येक गति या बजन लय है चाहे किसी भी वस्तु से उसका प्रादुर्भाव हुआ हो।

बोले– मनुष्य की वाणी से उत्पन्न होने वाले शब्दों का संयोजन 'बोल' कहलाता है अर्थात वह प्रत्येक शब्द जो मानव की जिह्या से उत्पन्न होता है, चाहे वह किसी भाषा का हो, संगीत की भाषा में बोल कहलाता है। हम देखते हैं कि संगीत की निर्मिति के लिये इन तीनों विद्याओं का होना अपरिहार्य है।

यदि ध्यानपूर्वक दृष्टि डाली जाये तो देखेंगे कि समस्त शरीरधारी और वर्तमान की प्रतयेक वस्तु उक्त विशेषताओं द्वारा नियन्त्रित हैं।

स्थल जगत की प्रत्येग वस्तु में ध्वनी, आन्दोलन तथा गति अवश्य व्याप्त है और विशेषज्ञता मानव तो इसडा प्रत्यक्ष उदाहरण है क्योकि सांसारिक सृष्टि की अन्य सभी वस्तुओं में तो केवल दो ही बाते मुख्या है– ध्वनी और गति अर्था स्वर और लय परन्तु मनुष्य में तृतीय विशेषज्ञ शब्द अथवा बोल को भी वियमान है। वास्तव में ये तीनों अवयव ही मानव जीवन डाअवलम्ब हैं।

संगीत कला की दूसरी विशेषता है कि संगीत की आराधना ईश्वर की आराधना है। स्मरण करता है जो कि उसका परम कर्तव्य है। वन्दन के लिए भावुक्ता के अश्र अैर तन्मयत की अवस्था नितान्त आवश्यक है। इस प्रकार की स्थिति संगीत के अतिरिक्त अन्य किसी वस्तु से प्राप्त नहीं हो सकती जो ह्दय में आग और प्राणों में तड़प पैदा कर सके। मनुष्य की इन्हीं विशेषताओं के संबई नतथा प्रतयक्षीकरण के लिए ही संगीत का उद्भाव हुआ है। इसीलिए संसार भर में संगीत की महान्ता अधिक है।

तृतीय विशेषता है मानव जीवन का सर्वप्रथम लक्ष्य आत्मिक आनन्द है यह लक्ष्य संगीत कला के अतिरिक्त अन्य किसी कला के माध्यम से प्राप्त नही हो सकता। क्योंकि आत्मा स्वयं इतनी आनन्दपूर्ण है जिसका ज्ञान ईश्वर के अतिरिक्त अन्य किसी को नही वह भी इस ललित कला से संगीत से शक्ति प्रदान करती हैं और इसीलिए यक कहावत प्रसिद्ध है कि जिस्म की गिज खान अैर रूह की होगी। संगीत कला से उतना ही उसका धन्ष्टि सम्बन्ध होगा कल से उतना ही आनन्द प्राप्त करेगी। आत्मानन्द की अभिवृद्धि तथा उसे स्तुडक्रश्रंग पर पहुँँचाने के निमित्त ही मानव को संगीत शिक्षण की आवश्यक्ता है जैस कि आत्मातत्व वेन्ताओं के कथन से स्पष्ट है कि उन्होंने इस कला को आत्मा मार्ग का सर्वश्रेष्ठ निदेशक तथा सहचर अनुभव किया और इसके प्रकार द्वारा उन्होनें सुगमतापूर्वक वे लक्ष्य प्राप्त किए जा कल्पना रूपी पृथ्वी की पहुँँच भी नही सकतीं। सहचर अनुभव किया और इसके प्रकाश द्वारा उन्होने सुगमता पूर्वक वे लक्ष्य प्राप्त किए जहॉँ कल्पना पक्षी की पहुॅच भी नही हो सकती।

विद्वान इस निष्कर्ष पर भी पहुँँचे कि आकाश और नक्षत्रों का सम्बन्ध भी संगीत कला से है।

यह सब कहने क तात्पर्य यही है कि संगीत की आवश्यक्ता इसलिए है क्योंकि यही आम्तानन्द और आत्मामार्ग का सर्वोच्च निदर्शक है।

चतुर्थ विशेषज्ञता संगीत का मानवीय स्वस्थ्य पर प्रभव संगीत का मानव के स्वास्थ्य पर भी पर्याप्त प्रभार पडता है। क्योंकि संगीत के तीनों विभागों 'स्वर' लय और बोल और उनके संयोजन में ऐसे तत्व निहित है जिसके द्वासरा प्रत्येक रो की चिडित्सा सम्भव है। क्योकि विद्वानों के कथानुसार के आन्देलन उद्भ्नूत ध्वनी के आधर निश्चित किया गया है।

उपर्युक्त सभी तथ्यों के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँँचं है कि संगीत कल एक उत्कृष्ट कला है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल ते विद्वानों ने इसकी आवश्क्ता तथा जिवनोपयोगिता को स्वीकार किया है। इस स्वीकृति के परिणाम स्वरूप इसकी वृद्धी तथा संस्कार शीलता की दृष्टि से इसके शिक्षण की आवश्यक्ता पर महत्व दिया गया।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : http://oldror.lbp.world/